धर्म युद्धों का प्रभाव (भाग-1)

(IMPACT OF CRUSADES)

For:U.G. Sem-2,MJC,Unit-5

धर्म योद्धा पवित्र भूमि जेरूसलम पर अधिकार कर पाने में भले ही असफल रहे किंतु इसके कई सकारात्मक परिणाम निकले। ईसाइयत एवं इस्लाम के इन मध्यकालीन संपर्कों का यूरोप तथा एशिया के जीवन के विभिन्न पक्षों पर बहुमुखी प्रभाव पड़ा।

1. धर्म युद्धों का पोप व्यवस्था तथा चर्च पर गहरा प्रभाव पड़ा। चुकि धर्म युद्ध की शुरुआत पोपतंत्र ने की थी और 200 वर्षों तक पोप की मुख्य अभिरुचि इनमें थी , इसका उनपर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। पोप की प्रतिष्ठा तथा गौरव में वृद्धि हुई। नाइटों तथा साधारण जनों के अतिरिक्त यूरोप के तत्कालीन राजा भी धर्म युद्ध के प्रश्न पर पोप के अनुगामी थे। जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड ,नेपल्स, हंगरी आदि सभी देशों के शासक पोप के निर्देशन में पवित्र भूमि की लड़ाई लड़े। अतः दो शताब्दियों तक पोप यूरोप की राजनीति में प्रधान बना रहा और उसकी प्रतिष्ठा तथा शक्ति बढ़ती रही।

   - धर्म युद्ध ने पोप की सैन्य शक्ति और उसकी आर्थिक संपन्नता को बढ़ाया। जेरूसलम की मुक्ति के नाम पर अनेक

लोग पोप के लिए सैन्य सेवा देने के लिए तत्पर थे। इससे पोप की सैन्य शक्ति में वृद्धि आई साथ ही धर्म युद्ध के संचालन तथा सफलता के लिए लोगों ने पोप को काफी आर्थिक सहायता दी जिससे चर्च तथा मठ आर्थिक रूप से संपन्न हुए। धर्म योद्धाओं की संपत्ति को खरीद कर अथवा उसे उपहार प्राप्त कर चर्च आर्थिक संपन्नता प्राप्त की। इसके अलावा धर्म युद्ध के समय पोपों ने आर्थिक लाभ की प्राप्ति के लिए **दंड मुक्ति** तथा **दशांश कर** का उपयोग किया। **अर्बन द्वितीय** ने संपूर्ण ईसाई जगत पर दंड मुक्ति का कर लगाया जबकि **पोप इनोसेंट तृतीय** ने दशांश कर का आमदनी के एक निश्चित स्रोत के रूप में उपयोग करना शुरू किया। इन सब का सम्मिलित परिणाम यह हुआ कि पोप के गौरव में वृद्धि हुई ।उसकी सैन्य शक्ति और आर्थिक संपन्नता बढ़ी।

- पोपतंत्र को धर्म युद्ध से नुकसान भी उठाना पड़ा। इसका मूल कारण धर्म युद्ध की असफलता नहीं बल्कि पोप द्वारा यूरोप में ही ईसाई राजाओं के विरुद्ध दुष्प्रयोग था। इससे सामान्य जन में पोप तंत्र के प्रति वितृष्णा का भाव पैदा हुआ। पोप तंत्र की शक्ति में असाधारण वृद्धि से यूरोपीय शासक वर्ग चिंतित हो उठा और पोपतंत्र एवं साम्राज्य का संघर्ष पहले की अपेक्षा अब तेज हो गया। दंड मुक्ति एवं दशांश कर का विरोध पादरी वर्ग ने भी करना शुरू कर दिया।

- मठों की संपदा में असाधारण वृद्धि के कारण मठीय जीवन में भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया जो मठीय व्यवस्था के पतन का कारण बना।

2. धर्म युद्ध के कारण यूरोप में शक्तिशाली राजतंत्र का विकास हुआ और सामंतों की शक्ति कम हुई। यह विशेषकर फ्रांस में हुआ क्योंकि फ्रांस धर्म युद्ध आंदोलन का प्रमुख केंद्र था ।अनेक सामंतों ने अपनी संपदा बेचकर धर्मयुद्धों के लिए धन जमा किया था और इस संपदा को खरीद कर राजा गण समृद्ध हुए। धर्म युद्ध में भाग लेने वाले बहुत से सामंत लौट कर वापस नहीं आए और उनकी जागीरें उत्तराधिकारी के अभाव में राजाओं द्वारा जब्त कर ली गई।

- विभिन्न देशों की सैन्य टुकड़ियों की पारस्परिक प्रतिद्वंदिता और राष्ट्रीय चेतना के कारण यूरोप के राज्यों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

3. धर्म युद्धों का यूरोप के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ा। धर्म युद्धों के कारण सामंती दासता से मुक्ति की प्रक्रिया तेज हो गई कमियों को दासता की जंजीर तोड़ने का मौका मिला।

- अनेक महत्वपूर्ण सामंत धर्म युद्ध में मारे गए या अपना सब कुछ गवा कर निर्धन हो गए। इससे एक ओर राजाओं की शक्ति में वृद्धि हुई तो दूसरी ओर सामान्य लोग सामंती उत्पीड़न से मुक्त हुए।
- धर्म युद्ध में भाग लेने वाले पुरुषों की अनुपस्थिति में स्त्रियां घर बार संभालती थी इससे उनका सामाजिक और आर्थिक महत्व बढा।
- उद्योग तथा व्यापार की उन्नति से गरीब तथा निरीह जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को अधिक सुखी जीवन जीने का अवसर मिला।

To be continued...

BY:ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.